

तंबाकू पर भारतीय शोध मौजूद है

डॉ. डी. बालसुब्रमण्यन

सिगरेट और अन्य तंबाकू उत्पाद अधिनियम 2003 के संदर्भ में संसदीय समिति के कुछ सदस्यों को लेकर विवाद की खबरें आई हैं कि कैसे अपने आर्थिक हितों के लिए उन्होंने नैतिक सिद्धांतों का उल्लंघन किया। इन सज्जनों को इस समिति से इस्तीफा दे देना चाहिए था। लेकिन उन्होंने ऐसा किया नहीं, और प्रधानमंत्री कार्यालय को सुधार के कदम उठाने पड़े।

और उन्होंने सच के साथ भी खिलवाड़ किया जो कि अब सरकारी वेबसाइट पर भी आ चुका है और प्रेस व मीडिया में प्रकाशित भी हो चुका है। समिति के अध्यक्ष ने कहा, “बीड़ी एक प्राकृतिक उत्पाद है और सिगरेट के मुकाबले बहुत छोटी होती है। इसलिए जहां तक नियमों की बात है तो बीड़ी की तुलना सिगरेट से नहीं की जानी चाहिए।” बढ़िया, तो सिगरेट भी प्राकृतिक वस्तुओं से बनाई जाती है। दूसरे सदस्य का कहना था, “प्रत्येक बीड़ी में तंबाकू की मात्रा बहुत कम होती है, इसलिए सिगरेट पीने और तंबाकू चबाने की अपेक्षा यह बहुत कम नुकसानदायक है।” एक तीसरे का कहना था, “आबूधाबी में लोगों ने क्या खोजा इस बात को भारत में लागू नहीं किया जा सकता। भारत में ऐसा कोई शोध कार्य नहीं किया गया है जो यह बता सके कि बीड़ी और बिना धुएं वाली तंबाकू (मतलब गुटका आदि) कैंसर उत्पन्न करती है।” एक चौथा सदस्य, ऐसे कई लोगों को जानता है जो रोज़ाना 60 से ज़्यादा सिगरेट पीते हैं और अभी तक कैंसर मुक्त हैं।

साफ तौर पर ये सारे बयान खोटे हैं। मैं पाठकों से अनुरोध करता हूँ कि तंबाकू नियंत्रण पर भारतीय पत्रिका *करंट साइंस* के विशेष खंड का अध्ययन करें। यह पत्रिका के 25 मई 2009 के अंक में छपा था और इंटरनेट पर मुफ्त में उपलब्ध भी है।

इस खंड में डॉ. सी. राय और डॉ. पी.सी. गुप्ता ने अपने लेख में भारत में हुए 37 अध्ययनों का हवाला दिया

है। कहने का मतलब यह है कि जो ऐसा कहते हैं कि भारत में बीड़ी और धुएंरहित तंबाकू के इस्तेमाल, स्वास्थ्य पर उनके प्रभाव और कैंसर से सम्बंध को लेकर कोई अध्ययन नहीं हुआ है वे झूठ बोल रहे हैं। इन आलेखों से पता चलता है कि बीड़ी के धुएं में भी उसी तरह के कैंसरकारी रसायन पाए जाते हैं जैसे कि सिगरेट के धुएं में होते हैं। और बीड़ी पीने से रक्त में सिगरेट के समान या इससे अधिक निकोटिन स्तर पाया जाता है।

ये आंकड़े पी.सी. गुप्ता और एस. अस्मा द्वारा संपादित ‘बीड़ी-पान और सामुदायिक स्वास्थ्य’ नामक रिपोर्ट में प्रकाशित भी हुए हैं जिसे सन 2008 में भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण को प्रस्तुत किया था। यह सभी के लिए मुफ्त में उपलब्ध है जिसे समिति के सदस्य चाहें तो पढ़ सकते हैं। यह साफ है कि समिति में कुछ सदस्य थे जिनके व्यापारिक हितों ने उन्हें कैंसर से इन्कार करने वाला बना दिया है (जैसे यूएस में जलवायु परिवर्तन से आंख चुराई गई थी)।

धूम्रपान की बात करते हुए हमें बिना धुएं वाली तंबाकू और पान मसाला को नहीं भूलना चाहिए। इन्हें 45 प्रतिशत से ज़्यादा लोग खाते हैं यानी हर दूसरा भारतीय इनका सेवन करता है। ये नसवार, छैनी, तंबाकू की पत्तियों, गुटखा, मावा, और ऐसे कई रूपों में मिलती है। मूल रूप से गुटखा सुपारी, कत्था, खाने वाला चूना और तंबाकू का सूखा सुगंधित मिश्रण होता है। यदि इसमें तंबाकू न हो, तो इसे पान मसाला कहा जाता है। इसके बारे में भारत और पड़ोसी देश में कई शोध किए गए हैं जिनसे पता चला है कि इनके लगातार इस्तेमाल से ओरल सबम्यूकोसल फाइब्रोसिस या OSF होता है। यहां तक कि पान मसाला और सुपारी का इस्तेमाल भी चिंताजनक है। डॉक्टरों की टीम - कलपकम पोलासा, बी. शशिकरन, पी.सी. गुप्ता, रंजू रल्हन, ए. मुखर्जी, बी.जे. दवे, सबाखान, आर.ए. भिसे ऐसे कुछ

शोधकर्ता हैं जिन्होंने पान मसाला और सुपारी के लगातार इस्तेमाल और OSF के परस्पर सम्बंध पर कई सारे शोध पत्र प्रकाशित किए हैं। OSF की शुरुआत होती है तीखे खाने के प्रति असहनशीलता, होंठों और जीभ की कठोरता, सबम्यूकोसल तंतुओं की कठोरता और दांतों की सफेदी घटने (ल्यूकोप्लासिया) से। लगातार पान मसाले के इस्तेमाल और OSF के बीच सम्बंध पर दो विस्तृत समीक्षाएं भी प्रस्तुत की गई हैं जो *म्यूटाजेनेसिस* नामक शोध पत्रिका में प्रकाशित हुई हैं। 2004 में उर्मिला नायर और अन्य के द्वारा और 2006 में डब्ल्यू.एम. तिलकरत्ने द्वारा। इन्हें इंटरनेट पर मुफ्त में पढ़ा जा सकता है। हाल ही में आर. आनंद और उनके साथियों ने सुपारी चबाने और OSF पर भारतीय अध्ययन किया है जो *जर्नल ऑफ कैंसर रिसर्च* में प्रकाशित भी हुआ है। इसलिए जब सुपारी और गुटखा इस्तेमाल के नियमन सम्बंधी समिति में कोई पान मसाला किंग शामिल

होता है, तो हमें अवश्य ही चिंता करने की ज़रूरत है।

भारत और पूर्व में भी कई सदियों से सुपारी का इस्तेमाल स्वास्थ्यवर्धक के रूप में भी होता रहा है और सामाजिक शिष्टाचार के नज़रिए से भी। तो स्वाभाविक है कि कई पाठकों को यह सब पढ़कर दुख होगा कि इसके कुप्रभाव भी हो सकते हैं। दुख की बात है कि यह सच है। इसके कभी-कभार इस्तेमाल या सामाजिक अवसरों पर इस्तेमाल को सीमित रखना चाहिए। पान के साथ थोड़ा खाया जाए, तो फिर भी ठीक है।

ऐसा इसलिए क्योंकि पान के पत्ते में कई यौगिक होते हैं जो न केवल लाभदायक हैं, बल्कि रासायनिक रोकथाम भी करते हैं, एंटीऑक्सीडेंट होते हैं। हाल ही में पान के बारे में एक अच्छा शोध पत्र प्रकाशित हुआ है। तो अगली बार जब कोई आपको पान पेश करे इसके बारे में ज़रूर सोचें।
(*स्रोत फीचर्स*)